हिन्दी कहाìनयों में नौकरी पोशा नारी की दाम्पत्य जीवन संबन्धी समस्याऐ

ए.शौकत अली
असोसियेट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग एस.डी.जी.एस कालेज, हिन्दूपुर-515201.
जिला अनन्तपुरम, आन्ध्र प्रदेश, भारत ।

सारांश

भारतीय समाज में प्रारंम्भ से नारी की महत्वपूणï स्थान रहा है । नारी तथा पुरुष दोनों एक दूसरे के पूरक हैं । नारी परिवार की ही नहीं बल्कि राष्ट्र की भी निमाïता होती है । आधुìनक युग में नारी प्राचीनकाल की रीति रिवाजों के बन्धनों को तोड कर समाज के सभी क्षेत्रों में अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को पुन:प्राप्त करने की कोशिश कर रही है । वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपने व्यक्तित्व तथा प्रìतभा का परिचय दे रही है । डा. मंजरी खन्ना के अनुसार ``यह अधुìनक युग की íक्षप्रता और वैज्ञाìनक यान्त्रिकता से संगध्द है''[1]। मूलत: नारि स्वावलंबन की इच्छा से कामकाजी बनती है । कभी कभी पËरवार के आíथïक संकट के कारण और अपनी पढाई का सही उपयोग करने की इच्छा से भी काम्काजी बनती है । इन के अलावा íसफï समय काटने के íलए तथा फैशन के रूप में नौकरी करनेवाली नारियाँ भी आज समाज मे दिखाई पडती है ।

मूल शब्द: समाज, जीवन, परिवार, नौकरी

प्रस्तावना

नौकरी करनेवाली नारी नौकरी के दौरान नये माहौल से गुजरना पडता है । इस माहौल के काराण उनके स्वात: íसध्द गुण जैसे भावुकता, पराíश्रतता, सहनशीलता आìद में परिवतïन होने की संभावना है । इन परिवतïनों के कारण उस के वैयìक्तक जीवन में काफी बदलाव आता है । कभी कभी इन परिवतïनों के कारण नौकरीनेवाली नारी को संघषï करना पडता है। इन परिवतïनों के आलोक में नौकरीकरनेवाली नारी के इस नये जीवन को ìहन्दी के कहानीकारों ने किस रूप में íचत्रत ìकया है, इस प्रश्न का समाधान ढूँडने की एक छोटी और ईमान्दारी कोशिश ही यह लेख है ।

नौकरीपेशा नारी और उस का जीवन समाजके अन्य वर्गों की नारी से भिन्न होता है । क्यों ìक उस का जीवन नौकरीपेशा वगï को प्राप्त ìवíशष्ट जीवन के धेरे में ही रहता है । नौकरीपेशा वगï íशíक्षत वगï होनेके नाते सहज ही इस वर्ग की नारी भी चेतन संपन्न होती है । उस की समस्याएँ, आकांक्षएँ, आशाएँ भी विíशष्ट होती हैं । इस वगï की नारी के दो मुख्य रूप हैं । 1. स्वयं वेतन कमानेवाली नारी और 2. नौकरीकरके परिवार में जीनेवाली नारी । इन दोनों मे पहले वगï की नारी का जीवन ही ज्यादा महत्व रखता है । क्यों कि इस का जीवन वेतन्भोगी वगï के घर से ही नहीं बल्कि अपने कायाïलय से भी संबंध रखता है । इतनाही नहीं आर्थिक स्वालंबन पाने के कारण यह पारिवार के निर्णयों में समुíचत अíधकार रखती है ।

हिन्दी कहाìनयों में नौकरीकरनेवाली नारी के बहुआयामी जीवन का íचत्रण हुआ है। बडी संख्या में ऐसी कहाìनयाँ íमलती हैं, जिन में नौकरीकरनेवाली नारी का जीवन ही केंद्रीय भाव बन कर आया है । स्वावलंबी तथा चेतना संपन्न होने के बावजूद भी नौकरी करनेवाली नारी कही समस्याओं एवं शोषण के खिलाफ समझौता करती है तो कही संधषï भी करनी है । जैसे मन्नुभंडारी की कहानी 'क्षय' की एक

ऐसी नारी है जो नौकरी करते हुए भी अभाव का íशकार होती है । घर में कुन्ती को पिताजी के रोगग्रस्त होने से पूरे परिवार का दायित्व उठाना पड़ता है । अपने पिताजी के इलाज़ के साथ साथ वह अपने छोटे भाई को पढ़ाने का दायित्व भी उठाती है और उनके íलए अतिरिक्त श्रम करती है । आखिर अपना मन बहलाने का एक मात्र साधन वयíलन बजाना भी बंद करती है । इसीरूप में मेहरुन्निसा परवेज की कहानी 'विद्रोह' कूई नीना तथा हेतु भरद्वाज की 'अनाम शून्य' कहानी की पाìद्मनी भी नौकरी करते हुए अपने पËरवार के सदस्यों के लिए अपनी सुख सुìवधाओं का परित्याग कर देती है ।

हिन्दी कहाìनयों में नौकरी पेशा नारी के कायाïलय जीवन के कई पहलुओं का चित्रण हुआ है । ममता काíलया की कहानी 'जांच अभी जारी है' में अपणाï का शोषण करने की चेष्टा दफतर के प्रत्येक कमïचारी करता है। क्षितिजा शमाïï की कहानी `ग्रहण' में मिसेज चंद्रा का कांडक्ट रिपोटï या कान्फिडेंसियल रिपोटï के नाम पर हेडक्लकï से लेकर मैनेजर तक सभी शोषण करने की कोíशश करते हैं । जब वह डट कर उसका ìवरोध करने लगती है तो उसे ज्यादा काम देकर कष्ट देते हैं । इसी रूप में सुधा अरोडा की कहानी 'भ्रष्टाचार की जय' में नारी का शोष्ण करने की कोशिश दफ्तर सभी करते हैं । जब वह इस का विरोध करती है तो उसे तबादला के नाम पर सजा देते हैं ।

सन् साठ के आसपास इस स्थिति में बहुत ही सुधार हुआ । इस के कारण हिन्दी कहानी-क्षेत्र में लेíखकाओं का बोलबाला रहा है । वे अपनी सूक्ष्म अभिव्यक्ति को लेकर इस क्षेत्र में अपना स्थान स्निश्चिकरने में सफल हुई हैं। साठोत्तर कालीन लिखिकाओं में मन्नू भंडारी, उषा प्रियंवदा, शíशप्रभा शास्त्री, íचत्रा मुदगल, निरुपमा सेवती, ममता काíलया, मेहरुìन्नसा परवेजÄ कृष्णा सोबती, कृषा अग्निहोत्री, मालत्यी जोशी, चंद्रकांÄन्ता, मíणका मोìहनी, अरुणा सीतेश, राजी सेट आìद के नाम उल्लेखनीय हैं ।

उपयुक्त सभी लेíखकाओं ने दांपत्य जीवन को अपनी कहाìनयों का कथ्य बनाया है और साथ ही दांपत्य जीवन के विसिध पहलुओं व आयामों तथा समस्याओं का अंकन किया है । साथ ही साथ आज के तनावपूणï दांपत्य जीवन में पत्नी रूप नारी की छटपटाहट का भी रेखांकन ìकया है । भारतीय समाज में नारी दांपत्य जीवन व पËरवार की धुरी मानीजाती है । क्यों ìक नारी का मुख्य कायï क्षेत्र पËरवार ही रहा है । उस का जीवन अभी पतिवार ìनरपेक्ष बना नहीं है । प्राचीन भारतीय समाज में पत्नी रूपी नारी को गृह स्वाíमनी, पतिगृह की साम्राज्ञी, अर्धांगिनी आìद उपाíधयों से अíभìषक्त ìकया गया है । किन्तु मध्य व आधुनिकयुग तक उसकी स्थिति इस के ìवपरीत देखि जा सकती है । उस समय वह पति गृह की साम्राज्ञी नहीं दासी व गुलाम है, गृह स्वाíमनी नहीं भोग-ìवलास ìक वस्तु बन कर रह गयी है और अर्धांìगनी न रहकर संतान उत्पाìत्त का यंत्र मात्र मानी गयी है ।

पति का अहं, पति द्वारा उपेक्षा, शोषण, पाìत का विवाह पुवï प्रेम, पति की महत्वाकांक्षा, शंकालू मनस्थिति, परिवार की आíथïक तंगी आìद से त्रस्त होते हुए भी राजीसेठ की 'अनावृत कौन' और 'अपने दायरे' की मैं, íचत्रा म्लुदगल की 'इस हमाम में' की दिवा, 'अपनी वापसी' की शकुन, अरुणा सीतेश की 'लक्ष्मण रेखा, विदु, मेहरुन्निसा परवेज की 'सोने का बेसर' की कुम कुम, अपने होने का एहसास की पत्नी मृदलागगï की 'तुक की मीरा', ऋता शुक्ल की 'कदली के फूल' की कालंदी, क्रांìत ìत्रवेदी की 'पौरुष' की सुनीता, मíणका मोìहनी की 'एक ही ìबस्तर पर' और 'हम बुरे नहीं थे' की मैं डा. नíमता íसंग की 'गलत नंबर का जूता' की सुजाता, शíशप्रभा शास्त्री की 'ग्रोथ' की उमादेवी, मालती जोशी की 'कलंक' की दीपाली आìद घरेलू व कामकाजी पíत्नयाँ अपने दांपत्य जीवन में समझौते का रास्ता अपनाती है । 'अनावृत कौन' की मैं अपने पाìतके अहं के कारण दाप्य जीवन में पूणï सुख से वíचत है । वह अपने पाìत से समझौता करना चाहती है। वह उससे कहती है - "ऐसे रह पाना ìकतना मुíश्कल है, आíखर यह कब तक चलेगा?" [2] 'कलंक' कहानी की दीपाली का पाìत

ìववाह पूणï प्रेम की याद में खोकर उसकी उपेक्षा करता रहता है , किन्तु वह उसे सहज बनाने का प्रयत्न करती है। वह कहती है - "उन्हें अपना बनाने के íलए मुझे बारह वषï की कìठन तपस्या करनी पडी थी"[3] । इस हमाम में की सुजाता अपने पति के मूढ विश्वास व परंपरावìदता से शोìषत है । फिर भी वह कहती है ìक "आदिमी और जगह बदल देने से जिन्दगी थोड़ी ही बदल जाती है"[4] । इसी प्रकार उपयुïक्त कहाìनयों की घरेलू पíत्नयाँ अपने पìत से शोìषत, दुíखत होते हुए भी आíथïक आश्रय तथा सामाíजक प्रìतष्ठा के कारण अपने पìत से समझौता करती है ।

शíशìप्रभा शास्त्री की 'ग्रोध' कहानी की उमा देवी कामकाजी है । उसका पति उसके चËरत्र के प्रति शंकालू हो उठता है । उसके हर सहयोगी से उसका संबंध जोडकर ताने कसता रहता है "मुझे देखने आने का तो बहाना है, ये सब लोग तेरी खाìतर आते हैं, मुझे मालूम था ìक तेरे इतने यार-दोस्त है"[5] । इसी प्रकार डा. रचना राहुल की 'अपना-अपना-अंतद्राह' कहानी की रुíच डा. डाक्टर है। वह अपनी मित्र से कहती है ìक "मेने और संजीव के बीच एक तनाव आ गया । कहने को तो हम एक आदर्श दंति है, पर सच तो यह है ìक हम इस Ërश्ते का ìनवाïह एक व्यवसाìयक ìववशता की तहत कर रहे हैं"[6]। मेहरुìन्नसा परवेज की 'पत्नी' अपने अपने पतियों से तलाक लेने के बाद पुन: ìववाह तो कर लेती हैं, किन्तु अपने पूवï दांपत्य जीवन की स्मृìतयों से और दांपत्य जीवन की एकरसता से ऊब जाती है । इस से उनमें छटपटाहट व द्वंद्व पाया जाता है । 'अंधे मोड से आगे' की पत्नी अपने दोनों तियों के बारे मे अनुभव करती है कि सुरजीत में एक प्रेकार की आदतें थीं तो मिश्रा में दूसरे प्रकार की ।--"वह देसा पिता था, यह विलायती ? वह एक प्रकार के प्रसंग से देह तक पहुंचता था, तो यह दूसरे प्रकार के"[7] ।

उपसंहार

कहानीकारों ने अपनी कहाìनयों के द्वारा यह स्थाìपत किया है कि आज नौकरी करनेवाली नारी को स्वावलंबी होकर भी अभावग्रस्त होकर जीना पड रहा है। अपनी इच्छाओं की पूìतï के लिए उन्हें दूसरों पर निर्भर होना पड रहा है । उसका परिचय हेतु भरद्वाज की पìद्मनी और पहरा की साìवत्री पात्र देते हैं । कायाïलय परिवेश में अपनी स्वतंत्रता तथा व्यक्तित्व को बनाये रखने के लिए संघषï करना पड रहा है । इस रूप में नारी को संघषï करने की प्रेरणा और शìक्त इन कहानियों से तथा नीलदेवी और मिसेज चंद्रा जैसी नारी पात्रों से देने की कोíशश हुई है । नौकरी पेशा नारी को ìनíश्चत रूप से संघर्ष करके ही आगे बढना है क्यों कि नारी केवल अपने पËरवार की ही ìनमाïता ही नहीं बíल्क राष्ट्र की भी ìनमाïता है । इस रूप में संघषï करने कि शक्ति हिन्दी कहानीकारों ने नौकरीपेशा नारी को प्रदान करने की सफल एवं ईमान्दार कोशिश की है ।

संदभï सूíच:

1. मंजरी खन्ना, कहानी का स्वरूप और विकास, प्रìतमान (सं) पृ: 51
2. अनावृत कौन, राजी सेठ तीसरी हथेली पृ: सं. 321
3. कलंक, मालती जोशी, मद्यांतर पृ: सं 26
4. इस हमाम में चित्रा मृदगल, पृ: सं. 99
5. ग्रेथ, शíशप्रभा शास्त्री, अनुत्तËरत पृ: सं. 24
6. अपना-अपना अंतदाïह, डा. रचना राहुल, तलाश त्रैमाíसक-सं.पृ: जनवरी मार्च, 1999,पृ.सं: 20
7. अंधे मोड से आगे, राजी सेठ तीसरी हथेली पृ.सं 110